भारत के राजपत्र The Gazette of India

द्यशाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II--खण्ड 3--उपखण्ड (1)

PART II-Section 3-Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 344] No. 344] नई बिल्ली, मंगलवार, विसम्बर 30, 1975/पौप 9, 1897

NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER, 30, 1975/PAUSA 9, 1897

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या वी जाती है। जिससे कि यह ग्रलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATION

- New Delhi, the 30th December, 1975
 G.S.R. 597(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 13 of the Central Sales Tax Act, 1956 (74 of 1956) the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Central Sales Tax (Registration and Turnover) Rules, 1957, namely:—
- 1, (1) These rules may be called the Central Sales Tax (Registration and Turnover) Amendment Rules, 1975.
 - (2) They shall come into force at once.
- 2. In the Central Sales Tax (Registration and Turnover) Rules, 1957 (hereinafter referred to as the said rules), in rule 12.—
 - (i) in sub-rule (1)—
 - (a) in the first proviso, for the word and figures "December, 1975" the word and figures "December, 1976" shall be substituted;
 - (b) after the second proviso, the following proviso shall be inserted, namely:—
 - "Provided also that where, in the case of any transaction of sale, the delivery of goods is spread over to different financial years it shall be necessary to furnish a separate declaration or certificate in respect of goods so delivered in each financial year.";

- (ii) in sub-rule (2)—
 - (a) after the words "indemnity bond", where they first occur, the words and letter "in Form G", shall be inserted;
 - (b) the following proviso shall be inserted at the end, namely:—
 "Provided that where more than one form of declaration is lost,
 the purchasing dealer or the selling dealer, as the case may be,
 may furnish one such indemnity bond to cover all the forms
 of declarations so lost.";
- (iii) in sub-rule (5) in the third proviso, for the word and figures "December, 1975", the word and figures "December, 1976" shall be substituted.
- 3. In Form E-I appended to the said rules, in each of the portion relating to the "Original", "Duplicate" and "Counterfoil", the following shall be inserted at the end, namely:—
 - "Explanation.—In this form, item D(iii) shall not be applicable in cases covered by the second proviso to sub-section (2) of section 6."
- 4. In Form E-II appended to the said rules, the Explanation at the end in each of the portion relating to the "Original", "Duplicate" and "Counterfoil" shall be renumbered as Explanation (1) and after Explanation (1) as so renumbered, the following Explanation shall be inserted, namely:—
 - "Explanation (2).—In this form, item D(iii) shall not be applicable in cases covered by the second proviso to sub-section (2) of section 6."
- 5. After Form F appended to the said rules, the following form shall be inserted, namely:—

"The Central Sales-tax (Registration and Turnover) Rules, 1957.

FORM G

Form of Indemnity Bond [See rule 12(2) and 12(9)]

Signed this......day of......one thousand nine hundred and......

WHEREAS sub-Rule (2) of Rule 12 of the Central Sales-tax (Registration and Turnover) Rules, 1957 requires that in the event a blank or a duly completed form of declaration is lost while it is in the custody of the purchasing dealer or in transit to the selling dealer, the purchasing dealer and as the case may be also a selling dealer each to furnish an indemnity bond to, in the case of purchasing dealer, the notified authority from whom the said form was obtained and in the case of a selling dealer, the notified authority of his State.

AND WHEREAS the Obligor herein is such *purchasing dealer/*selling dealer.

sent to(selling dealer)/*received by him from(name of the purchasing dealer)and sent to(notified authority of the selling dealer's State) in respect of the goods mentioned below (hereinafter referred to as the 'Form')									
S1. N o.	No, of Bill Invoice/Challan	Date	Description of Goods	Quantity	Amount				
which shall pay to [Rupe keep incurrabove shall	OW the condition of or shall in the ever the decision of the be final and binding the Government on the Government had by the Government written bond or oremain in full force.	nt of a loss si Government g on the Obligated demand and control (in rmless and in tent as a result bligation shalls, effect and y	uffered by the Go or the authority a (or) as a result of without demur the words) and shall idemnified against lit of the misuse of be void and of virtue. The Oblige	vernment (in ppointed for to the misuse of said sum of otherwise ind and from al of such Form no effect but or further un	respect of he purpose the Form, Rs emnity and l liabilities THEN the t otherwise dertakes to				
	age/charge the proj tion of proper deed	of mortgage/	charge for the pay						
	(61)	~ -	HEDULE erties mortgaged/cl	L 4\					
	• • •								
Obligance,	ND THESE PRESEN or hereunder shall n act or omission of t shown by the Gove	ot be impaire he Governme	d or discharged b	v reason of a	av forb e ar-				
Th preser	e Government agre	es to bear th	e stamp duty, if	any chargeabl	le on these				
preser	WITNESS WHERI nts executed by its written.	EOF the Obli authorised rep	gor *has set his presentatives, on t	hand/*has ca he day, mont	used these h and year				
	d by the above i Obligor								
	esence of								
1. 2.									
				(Obligor's s	lgnature)				

In presence of

1. 2.

Name and Designation of the Officer.

[No. F. 28/54/75-ST]O. P. MEHRA, Dy. Secy.

^{*}Strike out which is not applicable."

क्षिस मंत्रालय

(राजस्व ग्रौर बोमा विभाग)

श्रधिस् चना

नई दिल्ली, 30 दिसम्बर, 1975

सां का नि 597 (म्र).— केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय विकय कर श्रिधिनियम, 1956 की धारा 13 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त मिक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय विकय कर (रिजस्ट्रीकरण श्रीर श्रावर्त) नियम 1957 में श्रीर संगोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, श्रर्थात :--

- (1) इन नियमों का नाम केन्द्रीय विक्रय कर (रिजिस्ट्रीकरण श्रीर श्रार्वेत) संशोधन नियम 1975 है ।
 - (2) ये तुरन्त प्रवृत्त होंगे ।
- 2. केन्द्रीय विक्रय कर (रिजिस्ट्रीकरण ब्रीर श्रावर्त) नियम 1957 में (जिन्हें इसमें इसके पश्चान उक्स नियम कहा गया है), नियम 12 में,—
 - (i) उपनियम (1) में,—
 - (क) प्रथम परन्तुक में ''दिसम्बर 1975'' शब्द श्रीर श्रंकों के स्थान पर ''दिसम्बर 1976'' शब्द श्रीर श्रंक रखे जाएँगे;
 - (ख) द्वितीय परन्तुक के पश्चात निम्नलिखित परन्तुक जोड़ा जाएगा :——
 'परन्तु यह ग्रीर कि जहां, किसी विक्रय के संव्यवहार की दशा में, माल का
 परिदान विभिन्न वित्तीय वर्षों में किया जाना हो तो, प्रत्येक वित्तीय वर्ष में
 इस प्र₁ार परिदत्त माल की बाबत एक प्रथक घोषणा या प्रमाणपत्र प्रस्तुत
 करना भ्रावण्यक होगा ।";
 - (ii) उप नियम (2) में, --
 - (क) ''क्षतिपूर्ति बन्धपत्न'' शब्दों के ठीक पहले, जहां वे पहली बार श्राए हैं, ''प्ररूप छ में'' शब्द श्रीर श्रक्षर जोड़े जाऐंगे;
 - (ख) अन्त में निम्नलिखित परन्तुक जोड़ा जाएगा, प्रर्थात 'परन्तु जहां घोषणा के प्ररुपों में से एक से श्रक्षिक खो जाए तो, यथास्थिति, क्रेता व्यौहारी या विकेता व्यौहारी इस प्रकार खोए हुए सभी घोषणा के प्ररूपों की बाबत एक ही ऐसा क्षतिपूर्ति बन्धपत्र प्रस्तुत कर सकता है।'':
 - (iii) उपनियम (5) में, तृतीय परन्तुक में ''दिसम्बर, 1975'' शब्द श्रीर श्रंकों के स्थान पर ''दिसम्बर, 1976'' शब्द श्रीर श्रंक रखे जाएंगे ।
- 3. उक्त नियमों से उपाबद्ध प्ररूप ड० 1 में, ''मूल प्रति'' ''दूसरी प्रति'' तथा ''प्रति-पर्ण'' से सम्बन्धित प्रत्येक भाग में अन्त में निम्नलिखित जोड़ा जाएगा, अर्थात् :—
 - '**स्पष्टीकरण---इ**स प्ररूप में, धारा 6 की उपधारा (2) के द्वितीय परन्तुक के अन्तर्गत सम्मिलित मामलों में मद घ (।।।) क्षागु नहीं होगी ।'' ।

4. उक्त नियमो से उपाबद्ध प्ररूप ७० 2 में, ''मूल प्रति", "दूसरी प्रति" श्रीर ''प्रति-पर्ण'' से सम्बन्धित भाग में से प्रत्येक में अन्त मे दिया गया स्पष्टीकरण, स्पष्टीकरण (1) के रूप में पुनःसंख्याकित किया जाएगा श्रीर इस प्रकार पुनः संख्याकित स्पष्टीकरण '(1) के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण जोड़ा जाएगा, श्रर्थात :—

''स्पष्टीकरण (2)—इस प्ररूप में, धारा 6 की उपधारा (2) के द्वितीय परन्तुक के श्रन्तर्गत सम्मिलित मामलों में मद घ (॥।) लागू नहीं होगी ।''।

5. उक्त नियमों से उपाबद्ध प्ररूप च के पश्चात निम्नलिखित प्ररूप जोड़ा आएगा, भ्रयित् :—

''केन्द्रीय विक्रय कर (रजिस्ट्रीकरण श्रीर श्रावर्त) नियम, 1957

प्ररूप च

क्षतिपूर्ति बन्धपत का प्ररूप [नियम 12(2) भ्रौर 12(9) देखिए]

इ.स. बिलंख से सब लोगों को ज्ञात ही कि मैं————————————————————————————————————
जो कि केन्द्रीय विक्रय कर 1956 के ग्रधीन,
राज्य में,रिजस्ट्रीकरण संख्या
तारीख के श्रन्तर्गत रिजस्ट्रीकृत व्योहारी हूं । हम मैसर
भारतीय विधि के ग्रन्तर्गत एक रजिस्ट्रीकृत फर्म† / कम्पनी†
हैं भीर हमारा रजिस्ट्रीकृत कार्यालय———————————————————————————————————
केन्द्रीय विक्रय कर श्रिधिनियम, 1956 के श्रिधीनराज्य में, रजिस्ट्री-
करण सं०—————तारीख—————के ग्रन्तर्गत रजिस्ट्रीकृत
व्यौहारी हैं (जिसे इसमें इसके पश्चात् बाध्यताकारी कहा गया है) भारत के राष्ट्रपति/
—————————————————————————————————————
के प्रति
(णब्दों में)
किए जाने पर बिना किसी ग्रापत्ति के सरकार को संदाय करने के लिए वचनबद्ध ग्रौर
दृढतापूर्वक आबद हं / हैं, जिस संवाय के पूर्णत: श्रीर सही रूप में किए जाने के लिए
मैं स्वयं को, श्रपने वारिसों, निष्पादकों, प्रशासकों, विधिक श्रभिकत्तीम्रों भ्रौर समनुदेशतियो
को भावद करता हूं । हम स्वयं को भीर भ्रपने उत्तराधिकारियों तथा समनुदेशतियों को
तथा उन सब व्यक्तियों को जिनका तत्समय हमारी म्नातिस्यों तथा कारोबार पर नियन्नण
हो, ग्राबद्ध करते हैं ।
ग्राज
माम केदिन हस्ताक्षरित है।

यतः केन्द्रीय विकय कर (रिजस्ट्रीकरण श्रीर श्रावर्त) नियम, 1957 के नियम 12 के उपनियम (2) में यह श्रदेक्षा की गई है कि यदि कोई रिका या सम्यक रूप से भरे गए घोषणा पत्न का प्ररूप खो जाता है, चाहे खोने की यह घटना तब हुई हो जग ऐसा प्ररूप केता व्योह, री की श्रिभरक्षा में हो या तब जब विकेता व्योहारी को उसका श्रीमवहन हो रहा हो तो, यथास्थिति, केता व्योहारी तथा विकेगा व्योहारों भो कन्माः उस श्रीम्सूचित प्राधिकारी को जिससे उक्त प्ररूप प्राप्त किया गया था, तथा उस राज्य के श्रीम्सूचित प्राधिकारी को, भेजेगा।

श्रोर यतः कःध्यताकारा ऐसा केता व्योह रां * / विकेता व्याहारा * है।

भीर यतः बाध्यनाहारी पत्र, जिसकी संख्या————————————————————————————————————	हे धी र जो कि स्थि प्राधिकारी का ना	क्त [ं] था†। स म श्रोर पदा	म्यक्षासे भ भिधान)	रा गया था† —द्वारा जारी
भेजा गया था है जिसके द्वारा— उसे प्राप्त हुआ। था के तथा — प्राधिकारी) को भेजा गया था विजित्त मोल को नाबत था।	(क्रेना 	च्यौहोरो का न -(ऋता व्यौह	गम) – री के राज्य	से के धिसूचित
ऋम बिल/इतवायस/चालान सं० की सं०	तारीख	माल का विवरण	मास्रा	रकम

संदाय करेगा तथा अन्य रू से सरकार की अतिपूर्ति करेगा और उसे उस प्ररूप के दृष्पयोग के परिणामस्यरू उपगत सभी दायिखों के लिए और उनके सम्बन्ध में अतिपूर्ति करेगा और सरकार को कोई हानि न होने देगा तथा ऐसा करने पर ऊर लिखित बन्धपत या बाध्यता शून्य हो बाएगी किन्तु अन्भया वह पूर्णनः प्रवत्त प्रमावी और सामर्थ्यपूर्ण रहेगी। बाध्यता-कान्दी उन्त रकम के संदाय के लिए अनुसूची में विनिर्दिष्ट सम्पत्तियों को समृचित बन्धक पत्र द्वार्य/इस्थिन्क पत्र द्वारा बन्धक रखने / भारित करते के लिए अनुसचक है।

प्रमुंसूची

(बन्धक रखी गई/भारित सम्पत्तियों का न्यीरा दीजिए)

तथा यह विलेश इस बात के भी साध्यस्वरूप है कि इसके भ्रन्तगंत बाध्यताकारी का दायित्व सरकार के अक्षिरत रहने के कारण या किसी कार्यया चूक के कारण या सरकार द्वारा सन्य विष् चाने या अनुप्रत के कारण कक्ष या समाप्त नहीं हो जाएगा।

सर्कार इस विलेख पर प्रनार्थ स्टाम्पशुल्क, यदि कोई हो, वहन करना स्वीकार करती है । इसके साक्ष्यस्वरूप बाध्यताकारी ने ग्रापने हस्ताक्षर कर दिए है । इस विलेख को ग्रापने प्राधिकृत प्रतिनिधि से, ऊपर लिखित दिन, मास ग्रौर थर्ष को हस्ताक्षिरित करा दिया है ।

ऊपर लिखित बाध्यताकारी द्वारा निम्मलिखित की उपस्थिति में हस्ताक्षर किया गया

1.

2.

(बाध्यताकारी के हस्ताक्षर)

वाक्षी

1.

2.

ग्रधिकारी का नाम और पदाभिधान

*जो लाग न हो उसे काट दीजिए।

[सं० फा॰ 28/54/75-वि० क०] भो० पी० मेहरा, उप तिचव।